आचार्य भरत : कृतित्त्व रचना

बृजेश कुमार श्रीवास्तव*

नाटकों के सम्बन्ध में शास्त्रीय जानकारी को नाट्यशास्त्र कहते हैं। इस जानकारी का सबसे प्राचीन ग्रन्थ भी नाट्यशास्त्र के नाम से जाना जाता है। इसके रचयिता भरत मुनि हैं।

वर्तमान रूप में उपलब्ध नाट्यशास्त्र के रचयिता चाहे एक भरत हों या अनेक, परन्तु उनके विषय में इतना अवश्य कहा जा सकता है, कि नाट्यशास्त्र के रूप में उन्होंने साहित्य को एक बहुत बड़ी देन दी है। इस कृति को देखकर कोई भी कह सकता है, कि उसके रचयिता कुशल नाट्यशास्त्री एवं नाट्य प्रयोक्ता रहे होंगे। नाट्यशास्त्र से उनकी क्रमबद्ध एवं सूक्ष्म विवेचन करने की अद्भुत शक्ति का परिचय मिलता है। उन्होंने नाट्य सम्बन्धी सर्वांगीण विवेचन तो प्रस्तुत ही किया है। साथ ही नाट्य–कला तथा अभिनेताओं को समाज में प्रतिष्ठित स्थान दिलाने का भी महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है। आपस्तम्ब तथा गौतम के धर्मसूत्रों एवं मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में सभ्य लोगों और विशेष रूप से ब्रह्मचारियों के लिये गीत, नृत्य तथा नाट्यादि से दूर रहने की सलाह दी गई है, और अभिनय का कार्य–करने वालों को तो शूद्र के समान हीन कहा गया है[1]। इससे स्पष्ट है कि प्राचीन काल में नाट्यकला तथा अभिनेता इन दोनों को हीन समझा गया है। भरत ने नाट्य विद्या को वेद कहकर इस हीनत्व को दूर करने का क्रान्तिकारी प्रयास किया है। अभिनेताओं की प्रशंसा में तो उन्होंने यहाँ तक कहा है कि उन्हें यज्ञ एवं दान करने वालों के समान शुभ गति प्राप्त होती है[2]। इस प्रकार नाट्यकला के उद्धार एवं प्रतिष्ठापन हेतु नाट्यशास्त्रकार का प्रयास स्तुत्य ही माना जायेगा।

नाट्यशास्त्र और आचार्य भरत के सम्बन्ध में आधुनिक विद्वानों में बड़ा मतभेद है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र को जिस प्रकार से एक जाली ग्रन्थ सिद्ध किया गया है। उसी प्रकार से नाट्यशास्त्र की प्रामाणिकता पर भी सन्देह बना हुआ है। कतिपय विद्वानों का कहना है कि जिस प्रकार से नाट्यशास्त्र के वास्तविक प्रणेता का नाम अज्ञात है उसी प्रकार उपलब्ध नाट्यशास्त्र की वर्तमान वस्तुस्थिति भी सन्देह मूलक है। उपलब्ध नाट्यशास्त्र को दृष्टिगत करने पर ज्ञात होता है, कि मूल नाट्यशास्त्र कदाचित् इससे भिन्न नाट्यशास्त्र की अनेक कारिकाओं को स्पष्ट करने के लिए कारिकाकार ने अनुवंश्य श्लोकों की रचना की है। ये श्लोक शिष्य–परम्परा द्वारा लिखे गये। अतः उपलब्ध नाट्यशास्त्र न केवल मूल नाट्यशास्त्र से भिन्न ज्ञात होता है, प्रत्युत वह एक लेखक की रचना भी नहीं है। वह अनेक लेखनियों का स्पर्श पाकर दीर्घकालीन प्रयास का फल है। उसमें समय–समय पर सुधार–संस्कार होते रहें हैं।

उपलब्ध नाट्यशास्त्र के तीन रुप हैं– सूत्र, भाष्य और कारिका। निश्चय ही नाट्यशास्त्र अपने मूल रुप में एक सूत्रात्मक रचना थी और तदन्तर उसकी व्याख्या एवं कारिकाएँ रची गयी होंगी। इस दृष्टि से नाट्यशास्त्र की मौलिकता संदिग्ध है। इसके अतिरिक्त अभिनवभारती, दशरुपक और भावप्रकाशन आदि ग्रन्थों में नाट्यशास्त्र और उसके रचयिता के सम्बन्ध में एक समान बातें देखने को नहीं मिलती है[3]।

श्री सुशील कुमार दे ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री ऑफ संस्कृत पोइटिक्स (वाल्यूम–1, नाट्यशास्त्र) और महामहोपाध्याय पाण्डुरङ्ग वामन काणे ने साहित्यदर्पण की भूमिका (पृ0 7, 8) में नाट्यशास्त्र के दो श्लोकों (37/18–28) तथा दामोदर गुप्त के कुट्टिनीमत, कोहलाचार्य के ताल ग्रन्थ, आचार्य हेमचन्द्र के काव्यानुशासन और सिंहभूपालकृत रसार्णवसुधाकर आदि ग्रन्थों के उद्धरणों एवं प्रमाणों को एकत्र कर यह मन्तव्य प्रकट किया कि नाट्यशास्त्र भरत की कृति न होकर किसी दूसरे की रचना है। इन दोनों विद्वानों और उनसे पूर्व नाट्यशास्त्र की सन्दिग्धता पर प्रकट किये गये विचारों का विधिवत् अनुशीलन कर श्री कन्हैयालाल पोद्दार ने[4] अपनी पुस्तक में सप्रमाण और साधार यह सिद्ध किया कि नाट्यशास्त्र एक प्रामाणिक कृति है और उसके प्रणेता महामुनि भरत ऐतिहासिक व्यक्ति हुए पो।ार जी के अतिरिक्त अन्य विद्वानों एवं इतिहासकारों ने भी भरत और उनके इस महान् ग्रन्थ की प्रामाणिकता को स्वीकार किया है।

नाट्यशास्त्र के कतिपय स्थलों से यह प्रतीत होता है कि नाट्य की परम्परा भरत को पितामह ब्रह्मा से प्राप्त हुई। नाट्य''ास्त्र में उल्लिखित नाट्योत्पत्ति विषयक उपाख्यान इस मन्तव्य को सिद्ध करता है। पितामह ब्रह्मा द्वारा सृष्ट चतुष्टयी नाट्यवेद और उसकी परम्परा में आचार्य भरत तक लिखा गया शास्त्र क्या था, इसका कोई भी प्रामाणिक ऐतिहासिक वृत्त उपलब्ध नहीं है। वे रचनाएँ कौन थी, इसका भी कोई उल्लेख नहीं मिलता है, किन्तु यह परम्परा क्रमबद्ध रुप में अग्रसर हुइ, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

* शोध छात्र, संस्कृत, डॉ0 राम म0लो0 अवध वि0वि0 फैजाबाद

पितामह ब्रह्मा द्वारा सृष्ट नाट्यवेद का आकार–प्रकार क्या था, परवर्ती ग्रन्थों में उसकी कतिपय सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं। आचार्य शारदातनय के भावप्रकाशन[5] से ज्ञात होता है कि नाट्यवेद में बारह हजार श्लोक थे और उन्हीं का संक्षेप कर आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र का निर्माण किया जो कि छः हजार श्लोक परिमाण का था[6]।

नाट्यशास्त्र के वर्तमान संस्करण में सैंतीस अध्याय और लगभग पाँच हजार श्लोक हैं। विभिन्न हस्तलेख संग्रहों से सुरक्षित उसकी हस्तलिखित प्रतियों में यह सङ्ख्या न्यूनाधिक्य रुप में मिलती है। ऐसा ज्ञात होता है कि बाद के लिपिकारों एवं प्रतिलिपिकारों के प्रमाद एवं पक्षपात से सङ्ख्या में परिवर्तन होता गया। सम्भवतः उसमें कुछ प्रक्षेप भी जुड़े हो।

जहाँ तक उसकी वर्तमान वस्तुस्थिति का सम्बन्ध है, प्रमाणिकता में उसके कोई सन्देह नहीं है। वह अपनी पूर्वोत्तर परम्परा का केन्द्रबिन्दु है। इस दृष्टि से महामुनि भरत नाट्यशास्त्र के प्रथम आचार्य हैं। उन्होंने नाट्यवेद को लोकोपयोगी रुप देकर नाट्यकला को जनमन के मनोरञ्जन का माध्यम बनाया। भरत मुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र भारतीय संस्कृत साहित्य का एक अत्यन्त प्रसिद्ध एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका रचना–काल विक्रम–पूर्व पञ्चम शताब्दी से लेकर विक्रम–पूर्व प्रथम शताब्दी तक माना जाता है अर्थात् कुछ विद्वान विक्रम–पूर्व पञ्चम शताब्दी में इसकी रचना मानते हैं और दूसरे विद्वान इसे विक्रम–पूर्व प्रथम शताब्दी की कृति मानते हैं। स्पष्ट रचना काल का निश्चय करना तो जटिल है किन्तु यह निश्चित है कि उसकी रचना विक्रम–सम्वतसर के आरम्भ होने के पूर्व ही हो चुकी थी। इसलिए वह अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ है। आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र में लिखा है, कि मैं इस नाट्यशास्त्र नामक पञ्चम वेद की रचना करता हूँ। उसमें धर्म, अर्थ, यश (श्रेयस्) और शास्त्र वचनों के उपदेश संगृहीत हैं। तथा लोक मङ्गल के समस्त भावी कर्मों का दिग्दर्शन किया गया है। इसके अन्तर्गत समस्त शास्त्रों के अर्थ की अभिव्यक्ति हुई है। वह सब प्रकार के शिल्पों का प्रवर्तक और अपने आप में एक इतिहास भी है–

धर्ममर्थ्यं यशस्यं च सोपदेशं ससंग्रहम्। भविष्यतश्च लोकस्य सर्वकर्मानुदर्शकम्।।
सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशिल्पप्रवर्तकम्। नाटयाख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्[7]।।

अर्थात् नाट्यशास्त्र का अनुशीलन करने पर प्रतीत होता है कि उसमें सम्पूर्ण शास्त्रों का सार, समस्त विद्याओं का तत्त्व, विविध कला–शिल्पों का निष्यन्द, धर्म, अर्थ, मोक्ष इस त्रिवर्ग का प्रतिपादन लोक संग्रह का दिग्दर्शन और इतिहास का उपवृंहण किया गया है। अतः नाट्यशास्त्र एक प्रकार का विधि ग्रन्थ है और पञ्चम नाट्यवेद के रुप में उसकी सार्थकता स्वयं सिद्ध है।

इस नाट्यवेद का निरुपण करते हुए आचार्य भरत ने लिखा है[8] कि 'उसके अन्तर्गत व्याकरण आदि अनेक शास्त्र, विद्याएँ और स्थापत्य, चित्र, मूर्ति, प्रस्त (रङ्ग) तथा सङ्गीत आदि अनेक कलाऐं एक साथ समाविष्ट हैं। उसका अङ्गभूत एक ही शास्त्र (ज्ञान) सागर के समान अनन्त तथा गम्भीर है, तथापि उसके उपाङ्ग अनेक शास्त्रों, विद्याओं और शिल्पों का तात्पर्य समझना सर्वथा दुष्कर है।'

न शक्यमस्य शास्त्रस्य गन्तुमन्तं कथञ्चन।
कस्माद् बहुत्वाज्ज्ञानानां शिल्पानां वाप्यन्ततः।।

अस्तु 'नाट्यशास्त्र' अपनी विधा का महान् एवं सर्वांगीण ग्रन्थरत्न है और परवर्ती नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों का उपजीवी एवं केन्द्रविन्दु भी। उसके एक–एक अंश के रिक्थ को लेकर परवर्ती ग्रन्थकारों ने स्वतंत्र ग्रन्थों का प्रणयन किया। उससे प्रेरणा प्राप्त कर नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थों के निर्माण की जो परम्परा स्थापित हुई, उससे भारतीय इतिहास का एक नया मार्ग प्रशस्त हुआ।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

1. आपस्तम्ब धर्मसूत्र 1/1, 3, 11, 12, गौतम धर्मसूत्र 1/15–18, मनुस्मृति 2/178, 8/65।
2. घोष–ना0शा0 36/79–80।
3. अभिनवभारती भाग 1, पृ0 8–24, द0रू0, 4/2, भावप्रकाशन पृ0 36, 287।
4. संस्कृत साहित्य का इतिहास भाग 1, पृ0 30–37।
5. भावप्रकाशन, पृ0 287।
6. एवं द्वादशसाहस्त्रैः श्लोकैरेकं तदर्धतः। षड्भिः श्लोकसहस्त्रैर्यो नाट्यवेदस्य सङ्ग्रहः।
   भरतैनमितस्तेषां प्रख्यातो भरताष्टयः।
7. नाट्यशास्त्र, 1/14–15।
8. वही, 6/6–8।